सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, बिहार
प्रेस विज्ञप्ति

संख्या– 438
10/06/2017

बिहार से बाहर जाकर रहने और वहाॅ काम करने वाले लोग प्रवासी नहीं हैं बल्कि वे वहाॅ के निवासी हैं :– मुख्यमंत्री

पटना, 10 जून 2017 :– मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार ने कहा है कि बिहार से बाहर जाकर रहने और वहाॅ काम करने वाले लोग प्रवासी नहीं हैं बल्कि वे वहाॅ के निवासी हैं। यदि एक प्रान्त के लोग देश के अंदर दूसरी जगह चले गये तो वे प्रवासी नहीं कहलायेंगे। उन्होंने कहा कि दिल्ली में बिहारियों की इतनी संख्या हो गयी है कि हम उन्हें वहाॅ का निवासी मानते हैं। मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार आज स्थानीय पाटलिपुत्र होटल में श्री अरविन्द मोहन द्वारा लिखित पुस्तक 'बिहारी मजदूरों की पीड़ा' तथा 'चम्पारण सत्याग्रह' पर आधारित उनकी दो अन्य लिखित पुस्तकों के विमोचन के उपरान्त समारोह को संबोधित कर रहे थे।

मुख्यमंत्री ने कहा कि 'बिहारी मजदूरों की पीड़ा' नामक पुस्तक में बिहार के बाहर जो मजदूरी करते हैं, उनके दुख–दर्द का बयां किया गया है। उन्होंने कहा कि सचमुच बिहार एवं अन्य राज्यों के लिये यह एक समस्या है। उन्होंने कहा कि जहाॅ तक बिहार का प्रश्न है, विभिन्न जगहों पर बिहार के लोग काम करने जाते हैं। आश्चर्य है कि बिहार के लोग ऐसे भी जगह पहुॅच जाते हैं, जहाॅ पर पहुॅचना अत्यंत कठिन है। मुख्यमंत्री ने वर्ष 1994 का एक उदाहरण देते हुये कहा कि जब वे सांसद थे तो कृषि संबंधी स्थाई समिति के अध्यक्ष के रूप में अंडमान गये थे। उसके बगल में एक टापू था, जहाॅ स्टीमर से लोग आते–जाते थे। वहाॅ जाने का मुझे अवसर मिला, वहाॅ एक कैंटिन हुआ करता था और उस कैंटिन में बिहार का आदमी काम करता था और वह रात में भी वहीं रहता था, जबकि बाकी सारे लोग वापस लौट आते थे। उन्होंने कहा कि जब वे रेल मंत्री थे तो नॉर्थ–ईस्ट जाने का मौका मिला। मणिपुर में एक रेल प्रोजेक्ट के शिलान्यास में मैं गया था। मेरी नजर किनारे–किनारे खड़े लगभग पाॅच सौ लोगों पर पड़ी। हाव–भाव से वे बिहारी लग रहे थे, उन्हें आश्चर्य हुआ कि इतनी बड़ी संख्या में इतने सुदूरवर्ती इलाके में बिहारी पहुॅचे हुये हैं। बाद में मणिपुर के मुख्यमंत्री ने कहा कि बिहारी लोग आपसे मिलना चाहते हैं। उन्होंने कहा कि वे जहाॅ भी गये बिहारी मिले। कोलकाता की बात छोड़ दें क्योंकि वहाॅ पर बिहारी बहुत बड़ी संख्या में हैं। उन्होंने कहा कि छतीसगढ़ जाने का भी मौका मिला। वहाॅ तो दरभंगा से रायपुर के लिये बस चलती है। वहाॅ मिथिला के लगभग तीन लाख लोग स्थायी रूप से बस गये हैं। उन्होंने कहा कि ये तो देश के अंदर की बात है। दुबई और अन्य देशों में भी बिहारी रह रहे हैं। उन्होंने कहा कि मॉरिशस में पूरी आबादी का 52 प्रतिशत लोग बिहारी हैं और आज भी बिहारी मूल के ही प्रधानमंत्री हैं।

मुख्यमंत्री ने कहा कि बिहार से बाहर जाने के पीछे और भी कई कारण हैं। इसके पीछे सामाजिक पृष्ठभूमि भी छिपी हुयी है। उन्होंने कहा कि यहाॅ के लोग सामाजिक पृष्ठभूमि के कारण बिहार में पहरेदारी एवं दरबानी का काम करने में अपमानित महसूस करेंगे लेकिन बाहर जाकर यही

काम दिलचस्पी से कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि मुझे भूटान जाने का मौका मिला। वहॉ के प्रधानमंत्री एवं मंत्री से मुलाकात हुयी। भूटान के प्रधानमंत्री ने कहा कि आपने बिहार में ऐसा क्या कर दिया है जो बिहारी यहॉ काम करते थे, वे या तो यहॉ से चले गये हैं या जाने की सोच रहे हैं। उन्होंने कहा कि जब हमने पूछा कि आप बिहारी मजदूरों को कितनी राशि देते हैं तो उनके द्वारा जो बताया गया तो मैंने कहा कि इतनी राशि तो बिहार में भी मिलती है। इसी तरह पंजाब का उदाहरण देते हुये मुख्यमंत्री ने बताया कि बिहार सरकार की नीतियों के कारण बिहार के मजदूर बाहर जाना कम कर दिये हैं।

मुख्यमंत्री ने कहा कि बिहार सरकार राज्य के अंदर या बाहर काम करने वाले मजदूरों के प्रति संवेदनशील है। उन्होंने कहा कि बिहार से बाहर प्रवास करने वाले मजदूरों की संख्या घट रही है, इसका कोई सर्वेक्षण नहीं है किंतु यह सब सामने दिखायी देता है। उन्होंने कहा कि बिहार के लोग पंजाब में न केवल खेतीबारी बल्कि उद्योग–धंधों को भी संभाल रहे हैं। वहॉ के लोग पंचायत प्रतिनिधि चुने जा रहे हैं। दिल्ली में इतनी संख्या हो गयी है कि वे अब प्रवासी नहीं हैं। कोलकाता एवं मुम्बई में बिहारियों की भारी संख्या है। अब वे प्रवासी नहीं निवासी हैं। उन्होंने पुस्तक के लेखक की ओर इशारा करते हुये कहा कि आपको प्रवासी वाली अवधारणा के संबंध में विचार बदलने होंगे क्योंकि देश के अंदर कहीं जाने वाले व्यक्ति प्रवासी नहीं है, वह उसका अधिकार है। उन्होंने कहा कि पैसा पैसा को आकृष्ट करता है। उन्होंने कहा कि कोई भी व्यक्ति पटना में यदि शादी कार्ड का व्यवसाय करना चाहता है तो वह दरियापुर में ही करना चाहता है क्योंकि वहॉ यह प्रचलित हो चुका है। उन्होंने कहा कि देश के कुछ हिस्सों में उद्योग लग गये और बिजनेस सेंटर बन गया तो लोग वहीं जायेगे, यही दुनिया की दस्तुर है। जहॉ पैसा लगा हुआ है तो यहॉ के लोग क्यों नहीं जायेंगे। उन्होंने कहा कि किसी तरह की परीक्षा में सबसे ज्यादा बिहार के परीक्षार्थी पास करते हैं। जहॉ रिक्ति निकलेगी, वहॉ बिहारी पास करेंगे क्योंकि बिहार के छात्रों के पास मेधा है। चांद पर भी यदि रिक्ति निकलती है तो बिहार के लोग चांद पर भी जाने के लिये लाइन लगा देंगे। उन्होंने पुस्तक के लेखक से कहा कि इसको दूसरे नजरिये से भी देखिये। उन्होंने कहा कि बिहारी को कहीं सताया जाता है तो पूरी सरकार पूरी संवेदना के साथ काम करती है और हम उनकी पूरी सहायता करते हैं।

मुख्यमंत्री ने पुस्तक के लेखक की ओर इशारा करते हुये कहा कि आप माइग्रेशन को लेकर चिंतित हैं लेकिन हमें ज्यादा व्यापक होकर सोचना है। हम तो चाहते हैं कि कोई बिहारी दिल्ली का मुख्यमंत्री बने और पंजाब का कोई सिख कनाडा का प्रधानमंत्री बने।

मुख्यमंत्री ने मजदूरों के लिये राज्य सरकार की विभिन्न योजनाओं पर भी प्रकाश डालते हुये कहा कि हम सबके कष्ट को तो दूर नहीं कर सकते किंतु कष्ट को कम करने के लिये पहल कर सकते हैं। उन्होंने पुस्तक के लेखक, आद्रि के सदस्य सचिव श्री शैवाल गुप्ता, जगजीवन राम शोध संस्थान के निदेशक श्री श्रीकांत को सुझाव दिया कि आपलोग मजदूरों के संबंध में मिलकर सुझाव दें और यदि सरकार को इससे संबंधित कोई योजना बनानी पड़े तो हम विचार करेंगे। उन्होंने कहा कि बिहार की अपनी आमदनी बढ़ रही है और यहॉ जो काम हो रहा है, यह उसका परिचायक है। पहले तो लोग 24 घंटे बिजली के बारे में सोचते भी नहीं थे। जितनी संभावना है, उन सब पर काम कर रहे हैं। कुछ मामलों में तो बिहार ने पहल की है। नारी सशक्तिकरण के क्षेत्र में पंचायती राज

संस्थाओं एवं नगर निकायों के निर्वाचन में पचास प्रतिशत आरक्षण का लाभ सबसे पहले बिहार ने दिया। उन्होंने कहा कि आज जीत कर 70 प्रतिशत महिलायें आ रही है। आपदा प्रबंधन के क्षेत्र में व्यापक काम हुआ है। उन्होंने प्रश्नवाचक लहजे में कहा कि पहले कोई प्रबंधन होता था क्या। बाढ़ आने पर दिसंबर में बाढ़ पीड़ितों को अनुदान देने के लिये लिस्ट बनाया जाता था। आज स्थिति यह है कि वज्रपात से मृत्यु होने के चार घंटे के अंदर प्रभावित परिवार के आश्रित को चार लाख रूपये की राशि दे दी जाती है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि सामाजिक क्षेत्र में भी व्यापक पहल हुआ है। उन्होंने कहा कि शराबबंदी के बारे में किसी ने हिम्मत नहीं की। यहाॅ तो लागू हो गया, इसके लिये जन चेतना भी जरूरी है। कुछ अपवाद हैं, उनको छोड़ दीजिये। उन्होंने कहा कि यदि अध्ययन करना है तो गाॅवों, कसबों एवं शहरों में जाकर अध्ययन कीजिये। शराबबंदी से समाज के माहौल में कितना बदलाव आया है। जो पहले कमाई का सारा पैसा गंवा देते थे, आज अपने परिवार की भलाई पर खर्च कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि सरकार स्वास्थ्य, शिक्षा, सामाजिक मुद्दों के क्षेत्र में पूरी तरह संवेदनशील है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि पुस्तक की अपनी महत्ता होती है। उसके सामने किसी भी चीज की महत्ता कोई मायने नहीं रखती। उन्होंने कहा कि पुस्तक सदैव कायम रहेगी। उन्होंने चम्पारण सत्याग्रह पर लिखी गयी पुस्तक के लिये पुस्तक के लेखक श्री अरविंद मोहन के प्रयासों की सराहना भी की।

इसके पूर्व पुस्तक के लेखक श्री अरविंद मोहन ने लिखी गयी पुस्तक के संबंध में विस्तार से प्रकाश डाला। समारोह को पूर्व केन्द्रीय मंत्री प्रो0 संजय पासवान, आद्रि के सदस्य सचिव श्री शैवाल गुप्ता, दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रोफेसर एवं राजद के राष्ट्रीय प्रवक्ता श्री मनोज झा ने भी संबोधित किया। कार्यक्रम का संचालन गैर सरकारी संगठन 'पैरवी' के निदेशक श्री अजय झा ने किया। इस अवसर पर जगजीवन राम शोध संस्थान के निदेशक श्री श्रीकांत, गणमान्य व्यक्ति एवं बुद्धिजीवी उपस्थित थे।

****